Appointments

हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

PG, II Sem.

विषय — उपन्यास और मध्यवर्ग का बोध-भाग

हिन्दी का पहला उपन्यास कौन सा है, इसपर थोड़ा विवाद रहा है। हिन्दी के पहले उपन्यास के रूप में जिन चार रचनाओं की चर्चा की जाती है, वे हैं — पं० गौरीदत्त लिखित 'देवरानी-जेठानी' (1870), मुंशी ईश्वरीप्रसाद 'रियाजी' और मुंशी कल्याण राय (1872) पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी लिखित भाग्यवती (1877) और लाला श्रीनिवास दास लिखित परीक्षा गुरु (1822) इन चारों रचनाओं के रचनाकार मध्यवर्ग के व्यक्ति हैं। इन चारों का लक्ष्य भी एक ही है अर्थात समाज-सुधार।

उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित हो रहे मध्यवर्गीय समाज का एक चित्र परीक्षा गुरु में प्रस्तुत किया गया है। परीक्षा गुरु में भी उपदेशात्मकता इसी का परिणाम है।

उपदेशात्मकता अनुभव के ऊपर उपदेश उपदेश
मिलने की संसारी वार्ता जितनी अनुभव पर
आधारित है।
हिन्दी उपन्यास के विकास के और
प्रारम्भिक चरण में, और बाद में भी उसके साथ
मध्यवर्ग का तीसरा संबंध है। पहला, उपन्यास
मध्यवर्ग का व्यक्ति लिखता है, दूसरा, उपन्यास
में मध्यवर्ग के जीवन का चित्रण होता है और
तीसरा उपन्यास का लक्षित पाठक सामान्यतः
मध्यवर्ग ही होता है। इसलिए जो कुछ इस वर्ग के
जीवन में घटता है और कुछ समाज की घटनाओं
चित्रण करता है। लेखक अपने जीवन में विविध अनुभ
से गुजरता है। अनुभव और अध्ययन से जो कु
सीखता है तथा उसकी जो भी आशा, आकांक्ष
और कल्पना रही है, वे सब हिन्दी उपन्यास
प्रतिबिम्बित हुई है।
हिन्दी उपन्यास धीरे-धीरे प्रौ
होता गया। हिन्दी उपन्यास की परिपक्व

Nothing is impossible, the word itself says "I'm possible"! – Audrey Hepburn

लक्षण सबसे पहले प्रेमचन्द के उपन्यासों में दिखायी देती है। हिन्दी का उनका पहला उपन्यास 'सेवासदन' (1918) में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में वेश्यावृत्ति की समस्या को उठाया है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में किसी न किसी समस्या को केन्द्र में रखकर उठाया है और उसके समाधान भी प्रस्तुत किया है।

भारतीय मध्यवर्ग जैसे-जैसे विकसित होता गया वैसे-वैसे उसमें व्यक्तिवादिता बढ़ती गई। स्वतंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यास में मध्यवर्ग के प्रखर होते ही व्यक्तिवाद अनेक रूपों में प्रतिबिम्बित होते हुए देखा जा सकता है। अज्ञेय का पहला उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' जब प्रकाशित हुआ तब उसमें परम्परावादी और प्रगतिशील दोनों को चौंकाया। स्वाधीनता के बाद के पहले दशक में उपन्यासों की एक पीढ़ी आई। इस पीढ़ी के प्रायः सभी उपन्यासकार शहरी वर्ग के व्यक्ति थे और अपने उपन्यासों में शहरी जीवन की समस्याओं का चित्रण कर रहे थे। इस पीढ़ी के उपन्यासकारों में तीन लेखिकाएँ भी उभरकर आईं।

MAR APR

T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T
5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

Appointments

कृष्णा सोबती उषाप्रियंवदा और मन्नूभंडारी) इन लेखिकाओं का अनुभव क्षेत्र मध्यवर्गीय है लेकिन पुरुषों के अनुभव से थोड़ा भिन्न है। मन्नूभंडारी ने पहला उपन्यास 'आपका बंटी' (1971) में मध्य-वर्गीय समाज में स्त्री-पुरुष के बदलते संबंधों, तलाक और बच्चों पर पड़नेवाले उसके प्रभाव का प्रामाणिक चित्रण किया है। भारत के परम्परावद्द समाज में मध्यवर्गीय व्यक्ति का अनुभव विस्तार और वैविध्य दोनों की दृष्टि से सीमित रहा।

मध्यवर्ग के उपन्यासकारों ने साहित्य के प्रति पूरी तरह समर्पित रहे। उनका मानना था कि यदि समाज को सच का आईना दिखाना है, तो लेखन ही सबसे बड़ा सहारा है जो राजनीति से भी आगे चलकर पूरे जन-मानस को एक नया रास्ता दिखाता है।

स्पष्ट है कि हिन्दी उपन्यास का अबतक का इतिहास भारतीय मध्यवर्ग का इतिहास है। भारत मध्यवर्ग के द्वारा लिखित इतिहास है। निकट भवि में इस स्थिति में कोई परिवर्तन होगा, इ संभावना कम ही दिखती है।

Whether you think you can or you think you can't, you're right. – Henry Ford